नोट – बाबा ने पहले से ही बताया हुआ है कि गीता के ही आधार पर अंत में बहुत सर्विस होगी, जैसे यज्ञ के आदि में बाबा गीता का ही clarification देते थे, ऐसे ही अंत में भी गीता के ही आधार पर सारी दुनियाँ में आवाज फैलेगी। इसलिए सभी के लिए अभ्यास पुस्तिका के रूप में गीता के प्रश्न अपनी सेल्फ स्टडी अर्थात् अपने अभ्यास हेतु दिए जा रहे हैं , जिनके उत्तर गीता के अंदर ढूँढने से स्वत: ही मिल जायेंगे।

अध्याय-1

अर्जुनविषादयोग-नामक पहला अ0।।

[1-11 दोनों सेनाओं के प्रधान-2 शूरवीरों की गणना और सामर्थ्य का कथन]

धृतराष्ट्र उवाच- धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।। 1/1

धृतराष्ट्र उवाच संजय	{धृत+राष्ट्र-जिसने शिव पण्डा अर्थात् पाण्डु के पाँच उंगलियों में गण्य अल्पसंख्यक 5 पाण्डवों की राज्य-संपत्ति को नोटों से वोटों वाली बेकायदे प्रजातंत्र सरकार द्वारा धर लिया है, ऐसे अन्याय से एकत्रित हुए धन, पद, मान-मर्तबे और जनबल के मद में अज्ञानान्धकार में पूरे ही अंधे हुए पूंजीवादी राजा बने} धृतराष्ट्र ने कहा- हे संजय! {सं+जय=अर्थात् हे संपूर्ण विश्वविजयी संजय!}
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे	{इस तमोगुणी तामसी कलियुग-अंत में चल रहे हिंदू-मुस्लिमादि "सर्वधर्मान् परित्यज्य" (गीता 18-66) के अनुसार ढेरों साम्प्रदायिक} धर्मों के युद्धक्षेत्र में {और उन धर्मों के आधार पर आडम्बरित-मुर्दा जलाना,जमीन में दफनाना आदि ढेरों} कर्मकाण्डों के कर्मक्षेत्र में,{उन मठ-पंथ-संप्रदायों के रूप में}
समवेता युयुत्सवः	एकत्रित हुए {तामसी बुद्धि वाले बड़े-2 बाहुबल की एटॉमिक हिंसा पर उतारु और} युद्ध के लिए उत्कंठित
मामकाः पांडवाश्चैव किमकुर्वत	मेरे {हठी-क्रोधी} पुत्रों और पाण्डु के पुत्रों {पाण्डवों} ने क्या {फैसला} किया?

● धर्मक्षेत्रे कर्मक्षेत्रे। कुरूक्षेत्रे माने कर्मक्षेत्रे। इस समय की बात, भगवानुवाच- ये धृतराष्ट्र, अंधे के औलाद और सजे के औलाद क्या करत भये? (साकार मुरली तारीख 19.6.66)

● इस धर्म के क्षेत्र में, धर्म के अखाड़े में, कर्मक्षेत्रे कर्म के अखाड़े में, कर्म की भूमि में युद्ध की इच्छा वाले कोई अच्छे कर्म करने वाले थे, कोई बुरे कर्म करने वाले थे, कोई असुरों की मत पर चलने वाले, कोई ईश्वर की मत पर चलने वाले। (वी.सी.डी.186)

● पाण्डव और कौरव यह है संगमयुग पर। तुम पाण्डव संगमयुगी हो, कौरव कलियुगी हैं। (मुरली तारीख 19.6.70 पृ.1 अंत)

● गायन भी है - एक है अन्धे की औलाद अन्धे और दूसरे है सज्जे की औलाद सज्जे। धृतराष्ट्र और युधिष्ठिर नाम दिखाते हैं। (मुरली तारीख 17.2.90 पृ.1 आदि)

संजय उवाच-दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनः तदा। आचार्यं उपसङ्गम्य राजा वचनं अब्रवीत्।। 1/2

व्यूढं पांडवानीकं दृष्ट्वा तु	व्यूहाकार, {व्यवस्थित, संगठित व नियंत्रित} पांडवों की सेना को देखकर अब
राजा दुर्योधनः तदा आचार्यं	{स्वभाव से दुष्टयुद्धकर्ता} राजा दुर्योधन ने तब {घड़े जैसी बुद्धि के विद्वान} आचार्य द्रोण के
उपसंगम्य वचनं अब्रवीत्	{सामने ही} पास जाकर {बड़े गर्व से 1 बड़े राजा की तरह अपने गुरु से} यह वचन बोला-

● पाण्डव सेना हो ना। सेना अलबेली रहती है या अलर्ट रहती है? सेना माना अलर्ट, सावधान, खबरदार रहने वाले। अलबेला रहने वाले को सेना का सैनिक नहीं कहा जाएगा। (अव्यक्त वाणी 21.11.92 पृ.80 आदि)

● द्रोणाचार्य कौन है? द्रोण माना क्या? द्रोण माने घड़ा, आचार्य माना आचार्य। घड़ा कलश को कहा जाता है अर्थात् ज्ञानकलश का आचार्य। (वी.सी.डी 1454)

पश्य एतां पाण्डुपुत्राणां आचार्य महतीं चमूं। व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता।। 1/3

आचार्य तव धीमता	{विकारी मानवनिर्मित ढेर शास्त्रों के प्राचार्य माने जाने वाले} हे आचार्य! अपने बुद्धिमान {बने}
शिष्येण द्रुपदपुत्रेण व्यूढां पांडुपुत्राणां	शिष्य द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न द्वारा व्यूहरूप में सजाई गई पाण्डु-पुत्रों की
एतां महतीं चमूं पश्य	इस {थोड़े समय में इतनी शीघ्रता से निर्मित} विशाल {ज्ञानशस्त्र सज्जित, पर्वताकार} सेना को देखिए।

● हमारी ये पाण्डव सेना है। क्या? कोई राज्य लेना होता है तो किसका सहारा लेते हैं? सेना बनाते हैं। संगठन तैयार करते हैं। तो ये हमारी पाण्डव सेना है। (वी.सी.डी. 1149)

- पाण्डव के महारथी जिनको कहा जाता है, उनकी भी सेना है। (साकार मुरली तारीख.2.1.63)
- पांडव सेना है ज्ञानी तू आत्मा। (अव्यक्त वाणी 16.10.69 पृ.120 अंत)
- बच्चों ने समझा है हमारी पाण्डव सेना रुहानी सेना है। रुहानी बाप के द्वारा बच्चों को रुहानी ज्ञान मिलता है। (वी.सी.डी. 1652)

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि। युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः।। 1/4

अत्र युधि	यहाँ {इस धर्मयुद्ध की पाण्डवीय सेना में धृष्टद्युम्न[1] ही नहीं, बल्कि} युद्ध में {सभी कौरवों-कीचकों-राक्षसों के बीच}
भीमार्जुनसमा महेष्वासा	{भयंकरकर्मी} भीम[2] और अर्जुन[3] के समान महाधनुर्धारी {गदाधारी, शस्त्रधारी व महान},
शूरा युयुधानो	शूरवीर {सत्य नारायण जैसा सदा युद्ध-इच्छा के साथ सत्यार्थ युद्धकर्ता विजयी सात्यकि} [4]युयुधान
च विराटः	और {आम्र के प्रवृत्तिमार्गी द्विदलीय बीज विष्णु जैसा मत्स्यदेश का बंगाली बीजरूप राजा} [5]विराट
च महारथः द्रुपदः	तथा {द्रौपदी यज्ञकुण्ड का निर्माता} महारथी [6]द्रुपद है। {जिसका पहले से ही ऊँचा & ध्रुव+पद है}

- पाण्डव के महारथी जिनको कहा जाता है उनकी भी सेना है और उनके भी यादगार मन्दिर हैं। (वी.सी.डी. 1697)

धृष्टकेतुः चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्। पुरुजित् कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः।। 1/5

धृष्टकेतुश्च चेकितानश्च वीर्यवान्	धृष्टकेतु[7] और {एक ही सुर का वक्ता} [8]चेकितान तथा बलवान {अमोघवीर्य शिव की नगरी}
काशिराजः पुरुजित् कुन्तिभोजः	काशी का [9]राजा, {अनेक नगरों का विजेता} पुरुजित्[10], {यदुवंशी/यादव} [11]कुन्तिभोज
च नरपुंगवः शैब्यः	और {मननशील} मनुष्यों में श्रेष्ठ {सदा शिवज्योति भगवान का पुत्र पुरुषोत्तम जैसा} [12]शैब्य {है}।

- महाभारी लड़ाई में मेल्स का नाम है। (मुरली तारीख 25.1.67 पृ.2 अंत)
- ये महारथियों के नाम दिए हैं। उन महारथियों में एक नरपुंगवः भी बताया है। **"शैब्यश्च नरपुंगवः"** जो शिव को फॉलो करने वाले वो शैव। मनुष्यो में कुछ ब्रह्मा को फॉलो करते हैं, कुछ विष्णु को फॉलो करते हैं, कुछ शिव को फॉलो करते हैं। उन फॉलो करने वालों में श्रेष्ठ मनुष्य कौन हैं? जो शिव को फॉलो करते हैं (रुद्रगण)। (वार्तालाप-1560)
- बापदादा अपनी सेना के महावीरों को, अस्त्रधारी आत्माओं को देख रहे थे कि कौन-कौन ऑलमाइटी अथार्टी की पाण्डव सेना में मैदान पर उपस्थित हैं। क्या देखा होगा? कितनी वण्डरफुल सेना है! दुनिया के हिसाब से अनपढ़ दिखाई देते हैं लेकिन पाण्डव सेना में टाइटल मिला है - नॉलेजफुल। (अ.वा.17.3.82 पृ.296 मध्य)

युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्। सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।। 1/6

विक्रान्त युधामन्युश्च वीर्यवान्	{युद्धकला में माननीय महापराक्रमी} विक्रमी [13]युधामन्यु तथा वीर्यवान/बलवान
उत्तमौजाः च सौभद्रो	{महादेव जैसा उत्तम ओज वाला} उत्तमौजा[14]और {रुद्र-भगिनी} सुभद्रा का पुत्र {मामाभिमानी [15]अभिमन्यु}
द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः	और द्रौपदी के {पाँचों} पुत्र-{ये} सब ही {देहाभिमानी हाथी पर सवार जैसे} महारथी हैं।

- जो सच्चे महारथी हैं अर्थात् सत्यता की शक्ति से चलने वाले महारथी हैं। (अ.वा. 27.2.96 पृ132 अंत)
- सदा अपने को कर्मक्षेत्र पर कर्म करने वाले योद्धे अर्थात् महारथी समझो। जो युद्ध के मैदान पर सामना करने वाले होते हैं, वह कभी भी शस्त्रों को नहीं छोड़ते हैं। सोने के समय भी अपने शस्त्रों को नहीं छोड़ते हैं।

(अव्यक्त वाणी 31.5.72 पृ.295 आदि)

● अभिमन्यु अभिमान की औलाद है, उसमें कूट-2 के अभिमान भरा हुआ है। क्या अभिमान भरा हुआ है? मैं भगवान का शिष्य हूँ, मेरे को पढ़ाई पढ़ाने वाला बचपन से कोई भी नहीं है, कौन हैं? खुद भगवान मेरे को बचपन से पढ़ाई पढ़ा रहा है, मैं किसी गुरु को नहीं मानता। अब यह नहीं देखेगा कि वो पढ़ाई विधिवत पढ़ करके पूरी की है या नहीं की है? विधि से सिद्धि मिलेगी या विधि को छोड़ करके सिद्धि लेंगे? विधिवत पढ़ाई पढ़नी चाहिए। फिर दूसरा अभिमान है मेरे को जन्म देने वाला ऊँचे-ते-ऊँचा पुरुषार्थी जिसके शरीर रूपी रथ को भगवान डायरेक्ट कंट्रोल करता है, वो मेरा बाप है, वो मेरा जन्मदाता है। ये दो अभिमान पतन के गर्त में ले जाने वाले हैं, देह अहंकार के सूचक हैं। भगवान को कोई मानता हो; लेकिन भगवान की बातों को ना मानता हो। मुरलीधर को मानता हो और मुरली से प्यार ना हो, मुरली रोज सुनता ना हो। जहाँ मुरली का संगठन क्लास चलता है, वो भी अटैंड न करता हो तो प्रैक्टिकल जीवन में पास होगा या फेल होगा? फेल हो जाता है। (वार्तालाप 737)

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम। नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते।। 1/7

द्विजोत्तम त्वस्माकं ये विशिष्टा	हे द्विजन्मा {मानवीय गीता-ज्ञानी} ब्राह्मणों में उत्तम! हमारे जो विशिष्ट {योद्धा} हैं,
तान्निबोध मम सैन्यस्य नायका	उन्हें {भी सेनापति होने योग्य आप} जान लीजिए। {वे} मेरी {कौरव} सेना के नायक हैं।
तान् ते संज्ञार्थं ब्रवीमि	उन्हें {पहले ही} आपके परिज्ञानार्थ बताता हूँ; {क्योंकि पितामह के बाद आप ही महारथी हैं।}

● पाण्डव सेना में कौन-कौन महारथी हैं और कौरव सेना में कौन-कौन महारथी हैं। तुम दोनों सेनाओं को जानते हो न। (मुरली तारीख 18.4.73 पृ.4 आदि)

● उसमें मुख्य एक्टर्स डायरेक्टर्स कौन हैं, वह जानते हैं। इसलिए तुम पूछते हो यह बेहद का नाटक है। इसमें कौन-2 मुख्य हैं। शास्त्रों में तो लिख दिया है कौरव सेना में कौन बड़े हैं, पांडव सेना में कौन बड़े हैं। (मुरली तारीख 19.8.72 पृ.1 मध्य)

भवान् भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः। अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च।। 1/8

भवान्भीष्मश्च कर्णः	आप {स्वयं आचार्य हैं ही} और पितामह भीष्म {जिनकी माहिती शब्दार्थों में है,} ऐसे ही कर्ण
च समितिंजयः	और {आदि ना0 की ज्यों सारे संसार में कभी न हारने वाला, सदाकाल युद्ध में विजयी} समितिंजय,
कृपः च तथा एव	{कुरू-राजपरिवार में निस्वार्थ (?) सेवा वाले बड़े कृपालु?} कृपाचार्य, और उसी तरह {आपका प्रिय पुत्र}
अश्वत्थामा	{मन रूपी सर्पमणि का धारणकर्ता} अश्वत्थामा, {दुर्योधन के सामने ही निडर होकर कटाक्षकर्ता और}
विकर्णः च	{चापलूस कर्ण और दुःशासन के भी विपरीत स्वभाव वाला} विकर्ण और {इस चापलूसी संसार में}
सौमदत्तिः	{शीतल ज्ञान कृष्णचंद्र उर्फ सतयुगी 16 कला नारायण की तीसरी पीढ़ी के नारायण में प्रविष्ट, भूरि-2 प्रशंसनीय महात्मा बुद्ध ही} सोमदत्त-पौत्र भूरिश्रवा है। {इस बात के संज्ञानार्थ AIVV का एडवांस कोर्स अनिवार्य है।}

● धृतराष्ट्र के बच्चे यानी अंधे की औलाद, उनकी सेना में कौन-2 थे? देखो आते हैं ना- भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा। ये किसकी सेना में थे? धृतराष्ट्र की। अंधे की औलाद अंधे। (साकार मुरली तारीख 04.06.1965)

● भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा- ये सभी किसके थे? कौरव की सेना में थे। (साकार मु.ता.27.2.66)

● अश्व स्था मा । कैसी माँ? जो अश्व में स्थित है। "अश्व" माने चंचल मन रुपी घोड़ा तो मन रुपी घोड़े में स्थिर रहना अच्छा है या बुद्धि में स्थिर रहना चाहिए? मन चंचल है, तो जो भी मन में आया सो ही किया। पाप-पुण्य कुछ भी नहीं देखा। मन में आया। भले क्रोध आ गया। तो 5 पांडवों की हत्या करने के लिए चल पड़े। ये भी नहीं देखा कि जिनकी हम हत्या कर रहे हैं वो छोटे-2 बच्चे हैं पांडवों के या पांडव हैं। बस, धड़ाधड़ हत्या कर दी। तो मनमाना काम करना, मनमत पर चलना वो अश्वत्थामा का काम है। मन कौन है? ब्रह्मा मन है। मनमत के आधार पर जो काम किए जाते हैं या कराए जाते हैं वो अश्वत्थामा के कार्य हैं। (वीसीडी 1574)

● यह साधु लोग आदि सब (कौरव सम्प्रदाय) हैं।.....भीष्म-द्रोणाचार्य आदि सब ही हैं साधुओं के नाम। (मुरली तारीख 23.11.66 पृ.1 अंत)

● भीष्मपितामह अर्थात् बालब्रह्मचारी द्रोणाचार्य अश्वत्थामा आदि। यह सभी विद्वान पंडितों के नाम हैं।

(मुरली तारीख 18.2.72 पृ.1 मध्य)

● तुम्हारी धर्मयुद्ध हुई है विद्वान-पंडितों के साथ। धर्मयुद्ध को लड़ाई नहीं कहा जाता।

(मुरली तारीख 22.5.64 पृ.3 आदि)

अन्ये च बहवः शूराः मदर्थे त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः।। 1/9

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे जीविताः	और भी अनेक {कौरवपक्ष के} शूरवीर हैं {जो विशेष रूप से} मेरे लिए अपने जीवन का
त्यक्त सर्वे नानाशस्त्र-	{भी मन मारकर} त्याग करने वाले हैं। {वे} सभी अनेक {छल-छिद्र वाले ज्ञान-अज्ञान}-शस्त्रों से
प्रहरणाः युद्धविशारदाः	{मेरी मनमत से} प्रहार करने वाले हैं {तथा झूठी और आततायी हिंसक}-युद्धकला में निपुण हैं।

● यह (हिंसक युद्ध वाली) है ही झूठी दुनिया। (शास्त्रों में) झूठ मिरई झूठ। सच्च की रती नहीं। (मुरली तारीख 12.2.71 पृ.3 आदि)

● कौरवों में भी मुख्य-2 जो हैं, उनका नाम बाला है ना! यूरोपवासी यादव भी कितने हैं। सभी के नाम हैं। अखबार में नाम पड़ते हैं, जो नामीग्रामी हैं। सभी की परमपिता परमात्मा साथ विपरीत बुद्धि है। (मुरली तारीख 25.3.72 पृ.2 मध्यांत)

अपर्याप्तं तत् अस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितं। पर्याप्तं तु इदं एतेषां बलं भीमाभिरक्षितं।। 1/10

भीष्माभिरक्षितं तत् अस्माकं बलं	{समाज व सरकार में महासम्माननीय निवृत्ति मार्गी} भीष्म से रक्षित वह हमारी सेना
अपर्याप्तं तु इदं भीमाभिरक्षितं	अपार है, और यह {भेड़िए जैसे खदूस, राक्षसी वृत्ति के लम्बे-चौड़े } भीम द्वारा रक्षित
एतेषां बलं पर्याप्तं	इन {पाँचों पांडु-पुत्र पाण्डवों} की {अल्पसंख्यक} सेना सीमित है। {अतः हमारी जीत निश्चित है।}

● यादव कितने हैं, पांडव बहुत थोड़े हैं। गाया भी जाता है- राम (पाण्डू से पांडव) गयो, रावण (कुरु से कौरव) गयो और यादव (क्रिश्चंस) जिनकी बहुत सम्प्रदाय है। (मुरली तारीख 11.6.64 पृ.1आदि)

● अभी तो कौरव राज्य है। यह तो हिस्ट्रियों में भी (अभी की यादगार) लगा हुआ है कि पाण्डवों को कौरव बहुत हैरान करते थे; क्योंकि कौरव थे बहुत। पाण्डव थे थोड़े। शास्त्रों में तो बहुत बातें लिख दी हैं। तुम अभी प्रैक्टिकल में देखते हो। (मुरली तारीख 3.11.71 पृ1 अंत)

● कौरवों का है बड़ा झुण्ड; पाण्डवों का है छोटा झुण्ड। (मुरली तारीख 14.7.63 पृ.2 मध्य)

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः। भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि।। 1/11

च भवन्तः सर्व एव	इसलिए आप सभी लोग {जो भारतीय प्रजातंत्र राज्य के छोटे-बड़े पदाधिकारी रूप में शासक हैं,}
यथाभागं सर्वेषु	स्वविभागों {डिपार्टमेण्ट्स} के अनुसार, सब {पैदल-अश्व-गज-रथादिक पुरुषार्थियों रूप अधिकारियों के}
अयनेषु अवस्थिताः हि	मोर्चों पर डटे हुए हैं, निःसन्देह {जन-धन-वैभव-बाहुबल या रिश्वतखोरी द्वारा अन्याय से भी}
भीष्मं एव अभिरक्षन्तु	{सब ओर से} भीष्म की ही रक्षा करें; {क्योंकि वोटदाता प्रजाजनों में इन संन्यासियों का बहुत मान है।}

● भीष्मपितामह...होते ही हैं शंकराचार्य वाले लोग। (साकार मुरली तारीख 5.7.65)

● कहाँ से भी कोई संन्यासी पास करता देखेंगे तो उनको माथा ज़रूर टेकेंगे। हाथ जोड़ेंगे। कोई तो रास्त में ही पाँव पर पड़ जाते हैं। ऐसे भी भक्त होती हैं। गेरू कपड़े वाला देखा तो सिर झुकाया। अभी बाप समझाते हैं उन्हों को तुम बहुत खिलाते पिलाते हो ना। .... यह भी कितने ढेर संन्यासी हैं। उन्हों को तो तुम पाँव भी पड़ते हो, खाना भी देते हो। (मुरली तारीख 5.6.69 पृ.3 आदि)

● ये बड़े-बड़े सन्यासी-उदासी, विद्वान, पण्डित, आचार्य बगैरह-बगैरह। इस दुनियाँ में उनका कितना भी बड़ा मान हो, बड़े-बड़े देखो कितने भी बड़े हों। देखो क्या कहते है, वो तो कह देते हैं सर्वव्यापी है। (वी.सी.डी. 2839)

[12-19 दोनों सेनाओं की शंख-ध्वनि का कथन]

तस्य सञ्जनयन् हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः। सिंहनादं विनद्य उच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्।। 1/12

तस्य हर्षं संजनयन् कुरुवृद्धः	उस दुर्योधन को हर्ष उत्पन्न कराते हुए, कौरवों में वयोवृद्ध, {कायरों के ब्रह्मचर्य में सम्माननीय}
प्रतापवान् पितामहः उच्चैः विनद्य	{व} प्रतापी माने जाने वाले पितामह भीष्म ने {लाउडस्पीकरों की आवाज़ द्वारा ज्ञान-सूर्य के अखूट, अखंड ज्ञान-प्रकाश को ढकने वाले बादलों-जैसा} जोर से गरजकर, {हिंसक/खूंखार}
सिंहनादं	{जानवरों की दुनिया में बबर} शेर-जैसी गुंजायमान दहाड़ मारते हुए, {सारी दुनिया के झूठे जगद्गुरु के अपने नशे में}
शंखं दध्मौ	{आदि शंकराचार्य कृत 'भगवान सर्वव्यापी' की 12-14 सौ वर्षीय दीर्घकालीन अज्ञानता का मुख रूपी} शंख बजाया।

● सभी से बड़े-ते-बड़े असुर हैं संन्यासी, जो कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। (जबकि भगवान तो एक होता है।) (मुरली तारीख 7.1.71 पृ.3 अंत)

● साधु-संत आदि सभी पतित भ्रष्टाचारी हैं। सभी से जास्ती हमारी (शिव+ब्रह्मा की) ग्लानि करते हैं। जो कहते हैं- परमात्मा सर्वव्यापी है। (मुरली तारीख 1.1.73 पृ.3 अंत)

● तुम अभी कांटों से फूल बनते हो। संन्यासी ऐसे नहीं कहेंगे यह (दुःखदाई) काँटा है। वह तो कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। सभी भगवान के रूप हैं। (मुरली तारीख 12.2.69 पृ.1 मध्यांत)

● सारी दुनिया में सभी के मुख से गंद ही निकलता है। सबसे बड़ा गंद संन्यासियों के मुख से निकलता तो कहते ईश्वर सर्वव्यापी है। कितनी गाली देते हैं (बेहद के) बाप को। भगवान को कच्छ-मच्छ अवतार कह देते। कितना गंद निकालते हैं। इसलिए इनका हिरण्यकश्यप आदि नाम रखा है। (मुरली तारीख 30.1.70 पृ.3 अंत)

● यह है इन सन्यासियों का मिथ्या ज्ञान। परमपिता P. से सबको बेमुख कर देते हैं। P. को ही 84 लाख योनियों में ले गए हैं। इनको कहा जाता है धर्म ग्लानि। इन्होंने ही भारत को दुब्बण में फँसा दिया है। एक (सर्वव्यापी की) ही बात में सारी दुनिया निधणकी बन गई है। वह कौन-सी बात? ईश्वर सर्वव्यापी है, और फिर संन्यासी कहते

शिवोहम्, ब्रह्मोहम्। उन्हों को कहा जाता है निधणके। (मुरली तारीख 15.1.58 पृ.2 आदि)

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः। सहसा एव अभ्यहन्यन्त स शब्दः तुमुलः अभवत्।। 1/13

ततः शंखाश्च भेर्यः	तब {तो बाद में अनेक प्रकार के तुण्डे-2 मतिर्भिन्ना, छोटे-बड़े-मध्यम मुखों वाले ज्ञान}-शंख और भेरियाँ।
पणवानक च गोमुखाः	ढोल, नगाड़े और {जैसे ज्ञान-अज्ञान के बाजे, समाचार-पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो} रणसिंघा {चैनल्स आदि मीडिया, समाज और सरकार के लोगों की बड़ी बुलंद आवाज़ें}
सहसैवाभ्यहन्यन्त सः तुमुलः शब्दोऽभवत्	अचानक ही होने लगीं। उन {सब} का बड़ा भारी शोरगुल होने लगा।

● मीडिया से माया का घोर अंधकार फैल जाता है इस दुनिया में घोर पसारा। अरे! सब झूठ बोलने लग पड़ते हैं। ब्रह्माकुमार-कुमारी अपन को कहते हैं- हम ब्रह्मा के वत्स हैं और वो सरकार के नुमाइंदे, वो भी कहते हैं- अरे! हम तो कन्ट्रोल करते हैं सारे भारत को और उनकी भी बुद्धि खराब करने वाले ये मीडिया के लोग, ये अखबार, ये टी.वी चैनल्स, ये इन्टरनेट ये सब झूठ बोलने लग पड़ते हैं। ऐसा ये रावण का राज्य शुरू होता है। (वी.सी.डी. 3420)

● बहुत ग्लानि की बात आती है और वो ग्लानि है वो सुन करके एक दम फां हो जाते हैं। कौन? भारतवासी या विदेशी? भारतवासी फां हो जाते हैं। तो ये जो बॉम्बस बनाते हैं ग्लानि के, व्यभिचार (-दोष) की ग्लानि सबसे बड़ी ग्लानि हुई ना भारतियों के हिसाब से। समझा ना? तो ये बॉम्बस हैं बेहद के ब्राह्मणों की दुनिया में, ग्लानि के बॉम्बस, किसकी ग्लानि? ऊँच-ते-ऊँच पार्टधारी जो विश्वपिता है (वी.सी.डी. 2854)

ततः श्वेतैः हयैः युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ। माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः।। 1/14

ततः श्वेतैः हयैः युक्ते महति	तब {4 मलविहीन} श्वेताश्वों {के मनरूप संगठित चतुर्मुखी ब्रह्मा} से युक्त {अर्जुन के} महान
स्यन्दने स्थितौ मा+धवः च	{मुकर्रर शरीर रूपी} रथ में बैठे हुए माता पार्वती-पति {शिवबाबा} और {पांडु रूप पंडा के पुत्र}
पाण्डवः एव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः	पाण्डव अर्जुन ने भी अपने दिव्य {ईश्वरीय वाणी बोलने वाले मुख रूपी} शंख बजाए।

● इस (ब्रह्मा) में तो है (साकार-निराकार के मेल) बाबा की प्रवेशता। इनको अर्जुन रथ कहते हैं। (मुरली तारीख 2.3.89 पृ.2 आदि)

● इस रथ में (शिव) बाबा रथी बन हमको शिक्षा दे रहे हैं बाकी घोड़े-गाड़ी आदि की बात नहीं है। बाप बच्चों का (सारथी) सर्वेंट है। सर्वेंट तो आगे बैठेगा ना। (मुरली तारीख 15.11.73 पृ.3 अंत)

● यह (शंख रूपी) मुख की बात है। इससे तुम ज्ञान शंख बजाते हो। (मुरली तारीख 15.6.72 पृ.1 अंत)

● बाप यह (मुख की) शंख-ध्वनि करते रहते हैं। उन्होंने फिर भक्तिमार्ग में वह शंख और तुतारे आदि बैठ बनाये हैं। बाप तो इस मुख द्वारा समझाते हैं। (मुरली तारीख 7.11.70 पृ.3 अंत)

● शिव बाबा भी कहते हैं ब्रह्मा द्वारा तुमको अभी अच्छे-2 ज्ञान गोले दे रहा हूँ। मनुष्यों को अच्छी तरह से शंख ध्वनि करो। गीता का पार्ट फिर से बज रहा है और हेविनली (गाड फादर द्वारा) किंगडम स्थापन हो रही है। (मुरली तारीख 16.10.72 पृ.1 आदि)

● पांडवों का स्वयं परमात्मा सारथी था। (मुरली तारीख 20.2.71 पृ4 आदि)

(2017-2018 में ग्लानि की रण-भेरियाँ सुनकर बच्चे तो लोकलाज में आकर ज्ञान सुनाना बंद करने लगते हैं; परन्तु विरोधी दल के द्वारा लगातार मीडिया में हो रही धुँआधार ग्लानि के उत्तर में शिवबाबा ज्ञान सुनाते हैं इसलिए पांडव सेना में पहला शंख सारथी भगवान् और रथी अर्जुन ने साथ-2 बजाया उसके बाद नंबर (वार) महारथी बच्चे बजाते हैं।)

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः। पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः।। 1/15

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः। नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।। 1/16

हृषीकेशो पांचजन्यं	{धरणी माँ के साथ अन्य गौ रूपा} इन्द्रियों के स्वामी {अमोघवीर्य} शिवबाबा ने {पंचजन/पंचमुखी ब्रह्मा से} पांचजन्य,
धनंजयः देवदत्त	{सच्ची गीता-} ज्ञानधनजेता {होने से योगबल द्वारा विश्वविजेता} अर्जुन ने इंद्रदेव-प्रदत्त देवदत्त {नामक,}

भीमकर्मा वृकोदरः	{सैकड़ों धुरंधर कौरवों-कीचकों-राक्षसों के अकेले हत्यारे} भयंकर कर्म करने वाले {सर्वभक्षी खदूस} भेड़िया समान पेट वाले भीम ने {संसार रूपी जंगल में महाविनाशकारी व्याघ्र की दहाड़ में}
पौण्ड्रं महाशंखं कुन्तीपुत्रो	{पुण्डरीक-चिह्नित} पौण्ड्र नामक महाशंख, कुंती माता के पुत्र {जो अहिंसावादी धर्मयोद्धा थे, उन}
राजा युधिष्ठिरः अनन्तविजयं	{सदा ही सत्यवादी मुख वाले} राजा युधिष्ठिर ने {सत्य का सदा विजयदाता} अनन्तविजय,
नकुलः सुघोष	{महाविषैले व्यभिचारी वृष्णिवंशी विदेशियों प्रति न्यौला-जैसे} न+कुल ने {जो विश्व में न देशी या विदेशी रहे; किंतु विदेशी धर्माधीशों के मनरूप अश्वों का वशकर्ता तथा गजगोर समान घोषणा-जैसा} सुघोष
च सहदेवः	और {नानक नामके सिक्ख संप्रदाय में सदा देवात्माओं के सहयोगी ह्यूमन गौशाला रक्षक} सहदेव ने
मणिपुष्पकौ दध्मौ	{ज्योतिर्मय आत्मा रूपी मणि जैसी गुरुद्वारी वाणी बोलने वाला मुख रूपी} मणिपुष्पक शंख बजाए।

● महाभारी महाभारत युद्ध हुआ तो महारथियों ने पहले-2 क्या किया? शंख बजाए। अभी भी जो बड़े-2 महारथी हैं, वो क्या कर रहे हैं? जितना जास्ती शंख बजाते जाते हैं, उतना महाभारत का फील्ड भी तैयार होता जाता है।

(वी.सी.डी. 1542)

● आत्मा को समझ है कि मेरे में ज्ञान शंख ध्वनि करने की अच्छी ताकत है। हम शंख ध्वनि कर सकते हैं। कोई कहते हैं मैं शंखध्वनि नहीं कर सकता हूँ। बाप कहते हैं ज्ञान की शंखध्वनि करने वाले मुझे अति प्रिय हैं। मेरा परिचय भी ज्ञान से देंगे। (मुरली तारीख 21.10.73 पृ.3 मध्य)

● तुम सब ज्ञान के स्पीकर हो । (मुरली तारीख 2.3.89 पृ.2 मध्य)

● यह सारा ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में आ गया है। इसलिए स्वदर्शन-चक्र भी तुमको दिया है। शंख भी तुम्हारा है। यह है मुख से ज्ञान सुनाने की बात। ज्ञान का शंख बजाते हो। (मुरली तारीख 26.7.71 पृ.2 मध्य)

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः। धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः।। 1/17

द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते। सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान् दध्मुः पृथक्पृथक्।। 1/18

परमेष्वासः काश्यः च	{दैहिक पुरुषार्थ रूपी} महान {शरीर का} धनुष धारण करने वाले काशी के काशिराज ने और {ऐसे ही}
महारथः	{हाथी-जैसी देहांकारी महाकाली रूपा} महारथी {चोटी की बीजरूपा ब्राह्मणी सो रुद्राणी जगत्-अम्बा रूपी}
शिखण्डी च धृष्टद्युम्नो	{द्रुपदपुत्री} शिखण्डी ने एवं {ढीठ और बदला लेने के दृढ़ निश्चयी, निर्लज्ज पांडवी सेनापति} धृष्टद्युम्न ने,
विराटश्च अपराजितः	{प्रवृत्ति की यादगार विष्णुरूप जैसा} विराट एवं {किसी से कभी भी पराजित न होने वाला} अपराजित,
सात्यकिश्च द्रुपदो द्रौपदेयाश्च	{सदा सत्य के साथी} सात्यकि ने तथा {निश्चित ही ध्रुव पद पाने वाला कांपिल्य नगर का राजा, जो भूल से मित्रद्रोही भी था, उस} द्रुपद ने और द्रौपदी के {सूर्य[1]+चन्द्र[2] और बौद्धी[3], संन्यासी[4] व सिक्ख रूप[5]} पाँचों पुत्रों ने
महाबाहुः सौभद्रश्च पृथिवीपते सर्वशः	एवं {पांडवों का अतिप्रिय} महाबाहु सुभद्रापुत्र {जो अपने मामा, वैसे ही अलौकिक बाप को लेकर बड़ा धुरंधर देह-अभिमानी था- ऐसे अभिमन्यु} ने, हे धरणीश्वर! चारों ओर {फैली हुई दिशाओं के}
पृथक्-2 शंखान् दध्मुः	{एडवांस ब्राह्मणों ने} अलग-2 {प्रकार के ईश्वरीय एडवांस गीताज्ञान के सनसनी भरे मुख रूपी} शंख बजाए।

● बड़ी-बड़ी, अच्छी-अच्छी शंखध्वनि कौन करे? तो ज़रूर जो महारथी होंगे, जिनकी शेर पर सवारी होगी, हाथियों पर सवारी होगी, वो गजगोर करेंगे। (साकार मुरली तारीख 8.9.64)

● बाप बना रहे हैं हमको फिर सो श्रेष्ठाचारी। तो तुम भी ऐसे शंखध्वनि करो। अच्छे-अच्छे जो महारथी लोग हैं। नम्बरवार तो हैं ही। (साकार मुरली तारीख 8.9.64)

● धृष्टद्युम्न-वो भी (काम्पिल्य नगर के ज्ञान-) यज्ञ कुण्ड से पैदा होता है। पाण्डवों की सेना का सेनापति गाया जाता है। बाबा भी कहते हैं- तुम बच्चों की है रूहानी मिलेट्री। अण्डरग्राउण्ड गुप्त वारियर्स हो। ये रूहानी मिलेट्री का मार्शल कौन है? शंकर है सेनापति। (वार्तालाप 1041)

● विराट विष्णु के लिए बोला है। विष्णु ही विराट रूप धारण करता है। (वार्तालाप 1445)

● शिखंडी पार्ट किसका है? जगदम्बा का पार्ट है, तो जो जगदम्बा है वो बाण चलाती है या नहीं चलाती है? ज्ञान बाण चलाती है और वो ज्ञान बाण चलाने में किसके इशारे पर काम करती है? कन्याओं के द्वारा बाण मरवाए। बाण किसको मरवाए? बड़े-2 ऋषियों-मुनियों, संन्यासियों को, भीष्मपितामह जैसे संन्यासियों को बाण मरवाए। तो जो बाण मारने का काम है, वो छोटी-2 कन्याओं का है, इसलिए जगदम्बा की छोटी मूर्ति बनाते हैं और यादगार मंदिर भी छोटा बनाते हैं। (वार्तालाप 1789)

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्। नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्।। 1/19

स घोषो नभश्च पृथिवीं तुमुलो व्यनुनादयन्	उस {बुलंद ज्ञान-} घोष से आकाश• और •पृथ्वी को जोर से गुँजाते हुए
च धार्तराष्ट्राणां	{ज्ञान-घोष होने लगा} और {पूँजीवादी} धृतराष्ट्र के पुत्रों {महाभोगवादी काँग्रेसी-कौरव नेताओं} के
हृदयानि एव व्यदारयत्	{कमज़ोरियों से भरे हुए} हृदय ही विदीर्ण हो गए। {और इसीलिए ढेरों कौरवों के हार्टफेल हो गए।}

•{आकाशवाणी केंद्र और वेबसाइट्स} •{रेडियोज़, टेपरिकॉर्ड्स, टी.वीज़, लाउडस्पीकर्स आदि का पृथ्वी में फैला वाद्य-घोष}

● सच जब निकलता है तो झूठ सामना करते हैं।.....तुम (पांडव) किसको सच बताते हो तो (कौरवों को) जैसे मिर्ची हो लगती है। (मुरली तारीख 9.5.73 पृ.3 अन्त)

[20-27 अर्जुन द्वारा सेना-निरीक्षण का प्रसंग]

अथ व्यवस्थितान् दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः। प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुः उद्यम्य पाण्डवः।। 1/20

अथ कपिध्वजः	तब {चंचल मना कपि हनुमान की चंचल विजय-पताका से चिह्नित रथ वाली} कपिध्वजा धारणकर्ता
पाण्डवः धार्तराष्ट्रान्	{पांडु रूप पंडा पुत्र} पाण्डव-अर्जुन ने {कांव-2 कर्ता कौरवीय नेता} धृतराष्ट्र-पुत्रों को {ऐसे विशेष}
व्यवस्थितान् प्रवृत्ते दृष्ट्वा	{सतर्कता पूर्वक} सज्जित और प्रवृत्त हुआ देखकर, {अपने ज्ञान-योग-धारणादि के}
शस्त्रसम्पाते धनुः उद्यम्य	{अचानक} शस्त्र चलाने के समय {लचीला दैहिक पुरुषार्थ रूपी गाण्डीव} धनुष उठाया,

● ऐसे-2 बाण मारो तो कुंभकर्ण के नींद से जागेंगे। ये भीष्म, द्रौणाचार्य आदि अंत में जागने तो हैं। इस (धनुष उठाने) में हिंसा की तो बात नहीं। इन ज्ञान बाणों की बात है। (मुरली तारीख 10.3.63 पृ.3 मध्य)

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते। अर्जुन उवाच-सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत।। 1/21

महीपते तदा हृषीकेशं	हे {द्वेभानी हाथियों की पुरी हस्तिनापुर के} राजन्! तब {सन्नद्ध युद्ध के समय} परमपवित्र शिवबाबा से
वाक्यमिदमाह अच्युत मे रथं	{अर्जुन ने} यह वाक्य कहा- हे अमोघवीर्य {शिवबाबा}! मेरे {शरीर रूपी} रथ को
उभयोः सेनयोः मध्ये स्थापय	{कौरव-पांडवीय} दोनों सेनाओं के मध्य में {अवश्य ही गुप्तरूप से सुरक्षापूर्वक} खड़ा करिए,

● जिस रथ पर बेहद के बाप सवार हो करके आते हैं। वो रथ, अभी यादव-कौरवों और पाण्डवों की सेना के बीच खड़ा हुआ है। (वी.सी.डी. 682)

● निराकार शिव ज्योतिबिंदु उसमें प्रवेश करता है, शरीररूपी रथ को कंट्रोल करता है, इंद्रियों को कंट्रोल करता है, मन की लगाम अपने हाथ में लेता है या आत्मा को कंट्रोल करता है? आत्मा को तो समझाता है। गीता में अर्जुन को समझानी दी है ना, समझाने का मतलब कन्विंस करता है। कन्विंस हो जाए तो माने, कन्विंस न हो जाए तो कैसे मानेगा? (वी.सी.डी.2486)

यावत् एतान् निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्। कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन् रणसमुद्यमे।। 1/22

यावत् अहं एतान् निरीक्षे	जहाँ से मैं {अपने विशेष सहयोगियों सहित} इन {कौरवों} को निरीक्षण कर सकूँ {इस}
योद्धुकामान् अवस्थितान् कैः सह	{धर्म-} युद्ध के लिए उत्सुकतापूर्वक खड़े हुए किन {सक्रिय विरोधियों} के साथ
मया अस्मिन् रणसमुद्यमे योद्धव्यं	मुझे इस {अंतिम धर्म-अधर्म अथवा सत्य-असत्य के महाभारी महाभारत} युद्ध में लड़ना है।

● भगवान को हजार आँखें है। थोड़ी-मोड़ी आँखें हैं या हजार आँखें हैं? हजार आँखें है। अभी भी अखबारों में लिखते हैं इतना जो कुछ बवाल मच रहा है एक-2 बात की जानकारी ले रहा है। सारा दृश्य उसके सामने रखा जाता है तो कोई देखके रखने वाला है या नहीं है? कोई आँखों वाला देखेगा, तभी तो बताएगा। (वार्तालाप 1230)

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं ये एतेऽत्र समागताः। धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेः युद्धे प्रियचिकीर्षवः।। 1/23

ये एते अत्र युद्धे दुर्बुद्धेः	ये जो {राजा व इनकी सेना के लोग} यहाँ {सत्य-असत्य के आध्यात्मिक} युद्ध में कुबुद्धि वाले
धार्तराष्ट्रस्य प्रियचिकीर्षवः	{दुष्ट योद्धा} दुर्योधन का प्रिय {करतब} करने के इच्छुकजन {इस कलियुग के अन्तकर्ता कर्मक्षेत्र में}
समागताः योत्स्यमानानहमवेक्षे	{मरने लिए} एकत्रित हुए हैं, {सभी• विधर्मों के इन} योद्धाओं को मैं देखूँ तो। {गीता• 18 - 66}

● सफ़ेद पोश B.ks. धर्म के धुरंधर बने बैठे हैं लगातार सत्य को दबाने के लिए करोड़ों रुपये सरकारी अफसरों, तांत्रिकों और मीडिया वालों को दे रहे हैं (भूमिका)... आज बच्चों में ज्ञान कुछ ज़्यादा ही चल गया है ना। लेकिन बाप का ज्ञान नहीं, खुद का ज्ञान। खुद का ज्ञान चल गया है। खुद को बाप से भी ज़्यादा ज्ञानी समझते हैं।... बाप बने हुये कोई को 40 साल हो गये। प्रैक्टिकल में बाप बन गये। कोई को 30 साल हो गये, बाप के बाप बनकर बैठ गये और विरोधी एक्ट करने लगे। कोई को 20 साल हुये। सन् 2017-2018 में से 20 साल घटाया तो कितना आया? (किसी ने कहा-सन् 1997-1998) सन 1997-1998, तो तब से (खुला) विरोध करना शुरु कर दिया सक्रिय। (वी.सी.डी.2359)

संजय उवाच-एवं उक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत। सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमं।। 1/24

भारत गुडाकेशेन एवं उक्तो	हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र! निद्राजीत अर्जुन के ऐसे {उत्साह से} कहने पर
हृषीकेशो उभयोः सेनयोः	इंद्रियों पर सदा विजयी {शिवबाबा} ने दोनों {पाण्डवी व कौरवी} सेनाओं के
मध्ये रथोत्तमं स्थापयित्वा	बीच में {अर्जुन में प्रविष्ट हुए शिव ज्योति ने मुकर्रर शरीर रूपी} श्रेष्ठ रथ स्थापित किया।

● निराकार बाप भी इस दुनिया में फिर कैसे आवे, गायन भी है कि शरीर रूपी रथ पर आते हैं। तो उन्होंने फिर रथ दिखाय दिया है कि अर्जुन का रथ लिया, घोड़ों की गाड़ी ली, अब घोड़े क्या हैं? रथ क्या है? लगाम क्या है? सो कुछ समझते नहीं हैं। ये इन्द्रियाँ ही घोड़े हैं, ये मन-बुद्धि रूपी लगाम है, ये शरीर रूपी रथ है, जिस रथ पर बाप सवार हो करके आते हैं। वो रथ, अभी यादव-कौरवों और पाण्डवों की सेना के बीच खड़ा हुआ है। (वी.सी.डी. 682)

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षितां। उवाच पार्थ पश्य एतान् समवेतान् कुरून् इति।। 1/25

च भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां महीक्षितां इति	और भीष्म-द्रोण जैसे मुख्य-2 सब {कौरव-पक्ष के} राजाओं के सामने ऐसे
उवाच पार्थ! समवेतान्	कहा- हे पृथ्वी के राजा पृथापुत्र अर्जुन ! {यहाँ सारे संसार के कर्मक्षेत्ररूप कुरूक्षेत्र में} एकत्र हुए
एतान् कुरून् पश्य	इन {राम के बहाने रावणराज्य लाने वाले टेहरी-नंगल आदि योजनाओं के कर्माभिमानी कुरू-पुत्र} कौरवों को देखो।

● 'कुरु' संस्कृत अक्षर, 'कौरव' हिन्दी अक्षर, 'काँग्रेस' अंग्रेजी अक्षर। (साकार मुरली तारीख 30.9.1963)

● आजकल तो देखो, सब कोई प्लैन बनाते रहते हैं। वर्ष-वर्ष प्लैनिंग करते रहते हैं। देखो, जैसे दूसरे देश वाले सरकारें प्लैनिंग करते रहते हैं। भारतवासी भी प्लैन बनाय रहें हैं। अरे, इनकी तो प्लैनिंग पूरी नहीं होती। 5 वर्ष की प्लैनिंग फिर 8 वर्ष की, फिर 15 वर्ष की, 10 वर्ष की और समझते हैं कि हम राम-राज्य स्थापन करते हैं नई-2 प्लैनिंग स्थापन करके, बना करके। ये टेहरी बांध बनाएगें, ये नंगल डैम बनाएँगे, समझते हैं कि हम राम-राज्य स्थापन कर रहे हैं। अथाह धन-सम्पत्ति पैदा होगी, अथाह अनाज पैदा होगा उसके लिए प्लैन बनाते रहते हैं। (वी.सी.डी. 3063)

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान्। आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा।।1/26 श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि।

स्थितान् पितॄनथ पार्थ	{धर्मयुद्ध में} खड़े हुए पितृपक्ष {कि आसुरी धर्मों के बीज/पूर्वजों} को, उसी तरह हे पार्थ! {विपक्ष में खड़े}
पितामहानाचार्यान्पुत्रान् मातुलान्भ्रातॄन्	{भीष्म जैसे} प्रपिता रूप बाबाओं, विद्वानाचार्यों, पुत्रों को, मामाओं, भाइयों,
पौत्रान्सखीन् श्वशुरांश्च तथा सुहृदः	पौत्रों, मित्रों, श्वशुरों और उसी तरह {और भी अनेकों} सगे-सम्बन्धियों को
अप्येव उभयोः सेनयोः स्थितान् तत्रापश्यत्	भी स्पष्टतः {कौरव-पांडव} दोनों सेनाओं के बीच स्थित हुआ वहाँ देखा।

● बाप जानते हैं बच्चों का बुद्धियोग बहुतों के साथ रहता है। काका, चाचा, मामा आदि बहुतों से प्यार रहता है। (मुरली तारीख 30.3.69 पृ.1 मध्य)

● यहाँ तो भाई, बाप, मामा, चाचा, काका सभी सम्बन्धी दुश्मन बन जाते हैं।(वी.सी.डी.1373)

तान् समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान् बन्धून् अवस्थितान्।। 1/27 कृपया परया आविष्टो विषीदन् इदम् अब्रवीत्।

स कौन्तेयः अवस्थितान् तान्सर्वान्	वह कुन्ती माता का पुत्र {अर्जुन धर्म युद्ध हेतु तैयार} खड़े हुए उन सब {सगे-}
बन्धून् समीक्ष्य परया कृपया	संबन्धियों की {भावुक हृदय से} समीक्षा करके, {उन सबके मोह में} बड़ी दया से {पूरा}
आविष्टो विषीदन् इदमब्रवीत्	भरा हुआ, {उनके सन्नद्ध विनाश की स्मृति में} विषाद करते हुए यह बोला-

● ज्ञान नहीं है तो फिर बुद्धि मित्र-सम्बन्धियों आदि तरफ भटकती रहती है। (मु.ता.11.10.68 पृ.1 अंत)

● अज्ञानी होने के कारण मोह में फँसा हुआ है। पहले अपनी देह का मोह, देह के संबंधियों का मोह, देह के पदार्थों का मोह, ये बना रहता है। हर आत्मा नम्बरवार अर्जुन का पार्ट बजा रही है। सभी के अंदर वो अज्ञान है शुरूआत में। (वार्तालाप 1878)

[28-47 मोह से व्याप्त हुए अर्जुन के कायरता, स्नेह और शोकयुक्त वचन]

अर्जुन उवाच- दृष्ट्वा इमम् स्वजनम् कृष्ण युयुत्सुम् समुपस्थितम्।। 1/28

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति। वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते।। 1/29

कृष्ण इमं समुपस्थितं स्वजनं	हे आकर्षणमूर्त {शिवबाबा}! इन सामने खड़े हुए {दैहिक} सगे-संबंधियों को {मनमाना}
युयुत्सुं दृष्ट्वा मम गात्राणि	{धर्म-अधर्म} युद्ध करने के लिए उत्सुक देखकर मेरे अंग {दैहिक लगाव के कारण पूरे ही}
सीदन्ति च मुखं परिशुष्यति च मे	शिथिल हो रहे हैं और {कुछ बोलने लिए भी} मुख अत्यन्त सूख रहा है तथा {निराशा से} मेरे
शरीरे वेपथुश्च रोमहर्षः जायते	{सारे} शरीर में कम्प और रोंगटे खड़े हो रहे हैं। {जैसे आत्मबल पूरा ही क्षीण हो गया है।}

- बाप कहते हैं, यह देहधारी की याद एकदम (अवस्था नीचे) गिरा देगी। (मुरली तारीख 13.3.69 पृ.1 मध्य)
- जो श्रीमत मिलती है, उन पर पूरी रीति से न चलने कारण कमजोरी आती है। (अ.वा.24.1.70 पृ.184)

गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते। न च शक्नोमि अवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः।। 1/30 निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।

केशव गाण्डीवम्	हे परम ब्रह्मा के भी स्वामी {त्रिमूर्ति शिवबाबा}! गांडीव {नामक दैहिक पुरुषार्थ का लचीला} धनुष
हस्तात् स्रंसते च त्वक् एव	{चंचल मन वाले बुद्धि रूपी} हाथ से गिरा जा रहा है तथा {अचानक बुखार आने जैसी} त्वचा भी
परिदह्यते च अवस्थातुं च	{एड़ी से चोटी तक} सब ओर से दहक रही है और {इतना शिथिल हूँ कि} खड़े रहने में भी {जैसे}
न शक्नोमि मे मनः भ्रमतीव च	अशक्त हूँ। मेरा {किंकर्तव्यविमूढ़ बना} मन चकरा-सा रहा है और {सगे-सम्बन्धियों}
विपरीतानि निमित्तानि पश्यामि	{प्रति ऐसा मोहान्धकार कि} विपरीत {फलसूचक} शकुन-अपशकुन देख रहा हूँ।

- 'मोह सकल व्याधिन कर मूला' (तु. रामायण) ।
- जैसे जब कोई दुश्मन वार करता है तो पहले टेलीफोन, रेडियो आदि के कनेक्शन तोड़ देते हैं। लाइट और पानी का कनेक्शन तोड़ देते हैं फिर वार करते हैं, ऐसे ही माया भी पहले (भगवान से) बुद्धि का कनेक्शन तोड़ देती है जिससे लाइट, माइट, शक्तियाँ और ज्ञान का संग ऑटोमैटिकली बन्द हो जाता है। अर्थात् मूर्छित बना देती है। अर्थात् स्वयं के स्वरूप की स्मृति से वंचित कर देती है व बेहोश कर देती है। (अव्यक्त वाणी 16.10.75 पृ.196 अंत)

न च श्रेयः अनुपश्यामि हत्वा स्वजनम् आहवे।। 1/31 न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।

आहवे स्वजनं	धर्मयुद्ध में {विधर्मियों अथवा विदेशियों में कन्वर्ट हुए} अपने सगे-संबंधियों को {बौद्ध-मुस्लिमादि
हत्वा श्रेयश्च नानुपश्यामि	दैहिक गुरुओं में अनिश्चय की मौत} मारकर {मुझे} कल्याण भी नहीं दिखाई देता,
कृष्ण विजयं न	हे कामादिक शत्रुओं की खिंचाई कर्ता {शिवबाबा! मैं निराला महत्वाकांक्षी बन विश्व-} विजय नहीं
काङ्क्षे राज्यं च सुखानि च न	चाहता, {स्वर्गीय} राज्य और {विष्णु लोकीय वैकुण्ठ के अतीन्द्रिय} सुखों को भी नहीं चाहता।

- करते डारि परसमणि देहीं, काँच-किरच बदले में लेहीं। (तु.रामायण)
- मित्र-संबन्धियों का मुँह देखा और लट्टू हो बैठ गये। मोह ने घेर लिया। यह भी ड्रामा की भावी। (मुरली तारीख 15.7.08 पृ.3 आदि)

किम् नो राज्येन गोविन्द किम् भोगैः जीवितेन वा ।। 1/32

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च। त इमेऽवस्थिताः युद्धे प्राणान् त्यक्त्वा धनानि च।। 1/33

गोविन्द नो राज्येन किं भोगैर्वा	हे इन्द्रियों रूपी गौओं के शासनकर्ता! हमको राज्य से क्या? {ऐसे ही} भोगों वा
जीवितेन किं येषामर्थे नो राज्यं	{स्वार्थी} जीवन से क्या {लाभ?} {क्योंकि} जिन {सम्बन्धियों} के लिए हमने राज्य,

भोगाश्च सुखानि कांक्षितंते इमे प्राणान्	भोगों और सुखों को {अपना घराती समझ} चाहा है, वही ये {दुश्मन बनकर} प्राणों
च धनानि त्यक्त्वा युद्धे अवस्थिताः	व धन {धाम} को त्यागकर {धर्म-अधर्म के विशाल} युद्ध में जमकर खड़े हुए हैं।

● मोह तब जाता है जब यह स्मृति रहती है कि हम गृहस्थी हैं। हमारा घर, हमारा संबंध है तब मोह जाता है। (अ.वा. 22.7.72 पृ.342 अंत)

● लव सारा चला जाता है मित्र-संबंधियों आदि में। अक्ल सारा चट हो जाता है। (मुरली तारीख 24.8.75 पृ.3 मध्य)

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः। मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बंधिनस्तथा।। 1/34

आचार्याः पितरः पितामहाः पुत्राः च तथा एव	{कृप-द्रोणादि} आचार्य, काका, {भीष्मादि} बाबाएँ, पुत्र और उसी प्रकार
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः तथा सम्बंधिनः	मामाएँ, श्वशुरगण, पौत्र, साले और {अनेक तरह के} संबंधी {भी} हैं।

● बच्चों का बुद्धियोग बहुतों के साथ रहता है। काका, चाचा, मामा आदि बहुतों से प्यार रहता है। बाप समझाते हैं वह (सब व्यभिचारी) प्यार नहीं जैसे मार है। (मुरली तारीख 30.3.69 पृ.1 मध्य)

● इस पुरानी (नारकीय) दुनियाँ के मित्र-संबंधी आदि याद आते हैं। (मुरली तारीख.6.4.88 पृ.2 आदि)

एतान् न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन। अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते।। 1/35

मधुसूदन	{हम जैसे और सभी लोगों के लिए} मधु जैसे मीठे काम विकार रूपी दैत्य को मारने वाले हे कामहन्ता {शिवबाबा! मुझ पर}
घ्नतः अपि महीकृते नु किं	वार करते हुए भी {मैं समझता हूँ कि मेरे हैं और मेरे ही रहेंगे; अतः} पृथ्वी के लिए तो क्या,
त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः अपि	{वस्तुतः मेरे में इनके लिए ऐसा प्यार भरा है कि} त्रिलोकी के राज्य के लिए भी {मैं}
एतान् हन्तुं न इच्छामि	इन्हें {अपने-2 धर्मपिताओं में अनिश्चय की मौत} मारना नहीं चाहता। {है ना देहदृष्टि का कमाल?}

● अभी तो सब पतित हैं। इसलिए 5 तत्वों के पुतले से मोह हो गया है। इनको छोड़ने की दिल नहीं होती है। (मु. 26.3.99 पृ.2 मध्य)

निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्यात् जनार्दन। पापं एव आश्रयेत् अस्मान् हत्वा एतान् आततायिनः।। 1/36

जनार्दन	हे {आर्त्तनाद करने वाले} मनुष्यों द्वारा {दुःखों से मुक्ति के लिए कल्पांत में विशेष} प्रार्थनीय मुक्तेश्वर!
धार्तराष्ट्रान् निहत्य नः का	{प्रजातंत्र के पूंजीवादी} धृतराष्ट्र के {कांव-2 कर्ता कौरव}-पुत्रों को मारकर {भी} हमें क्या
प्रीतिः स्यात् तानाततायिनः	{विशेष} सुख होगा? इन {बेसमझ और बच्चाबुद्धि} आततायियों को {जान-माल से}
हत्वा अस्मान् पापमेवाश्रयेत्	मारकर {तो} हमको पाप ही लगेगा; {क्योंकि 'क्षमा बड़ों को चाहिए, छोटन को अपराध'।....}

● बच्चा धक्का खाता है। चोट लगती है तो दिल में दुख होता है। इस बेचारे को चोट लग गई। भल अपनी गलती से गिर पड़ते हैं फिर भी माँ-बाप गले लगाते हैं, प्यार करते हैं। (मुरली तारीख 18.9.73 पृ.3 अंत)

● कल्याण करने वाले के ऊपर कल्याण करना यह तो अज्ञानी भी करते हैं। अच्छे के साथ अच्छा चलना यह तो सभी जानते हैं। लेकिन अकल्याण के वृत्ति वाले को अपने कल्याण की वृत्ति से परिवर्तन करो या क्षमा करो। परिवर्तन न भी कर सकते, क्षमा तो कर सकते हो ना! मास्टर क्षमा के सागर तो हो ना! (अ.वा.ता. 13.2.91 पृ.43 मध्य)

तस्मात् न अर्हाः वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान् स्वबान्धवान्। स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव।। 1/37

तस्मात् स्वबान्धवान्	अतः {विधर्मियों-विदेशियों में कन्वर्टिड} अपने {ही बीज व आधारमूर्त दैवी जन्मों के} संबंधियों,
धार्तराष्ट्रान् हन्तुं वयं नार्हाः हि स्वजनं हत्वा	{जो राष्ट्र की सारी धन-संपत्ति धरे बैठे हैं, ऐसे} पूँजीपति धृतराष्ट्रों के पुत्रों को मारना हमें योग्य नहीं; क्योंकि {भाई-2 बने} स्वजनों को मारकर
माधव कथं सुखिनः स्याम	हे माता पार्वती-पति बाबा! {धर्मपिताओं में इनके अनिश्चय रूपी मौत पर} हम कैसे सुखी होंगे?

● बाप कहते हैं यह दुनिया है ही विनाशी चीज को प्यार करने वाली। कोई-2 का बहुत प्यार होता है तो मोह में जैसे चर्ये बन जाते हैं। (मुरली तारीख 26.8.70 पृ.1 अंत)

यद्यपि एते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः। कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकं।। 1/38

यद्यपि लोभोपहतचेतसः	यद्यपि {विदेशी लोन से प्राप्त हुए राज्य-धनादि के} लोभ से नष्ट हुए {भिखारी} चित्त वाले
एते कुलक्षयकृतं दोषं च	ये {विदेशियों की हिंसा व व्यभिचार से धर्मभ्रष्ट बने हुए} लोग कुल के नाश का दोष और
मित्रद्रोहे पातकं न पश्यन्ति	{अपने} मित्रों से {भी} द्रोह करने में पाप नहीं देखते हैं, {क्योंकि आधे-पूरे नास्तिक हैं।}

● जिन्होंने मूसल (मिसाइल्स) निकाले हैं, वह अभी अपने (ही यादव) कुल का नाश करने एक दो को धमकी दे रहे हैं। (मुरली तारीख16.2.74 पृ.1 अंत)

● यूरोपवासी यादव सेना, जिन्होंने साइंस से मूसल इन्वेंट की।.... यूरोपवासी यादवों के लिए गाया हुआ है- विनाश काले विपरीत बुद्धि। (मुरली तारीख 14.5.71 पृ.2 अंत)

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापात् अस्मात् निवर्तितुं। कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिः जनार्दन।।1/39

अस्मात् पापात् जनार्दन अस्माभिः	इस {संसार में होने वाले महाभारी महाविनाश के} पाप से हे जनार्दन! हम {सब}
निवर्तितुं कथं न ज्ञेयं	अलग होने के लिए {इस व्यर्थ के झगड़े पर} क्यों न विचार करें; {क्योंकि समूचे भारतवासी लोगों}
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिः	{से जुड़े} कुल के नाश से होने वाले {ऐसे सन्नद्ध} पाप को {हम} स्पष्ट देख रहे हैं।

● गेट वे टू हेविन इज महाभारी महाभारत गृह युद्ध। कोई कहे- हम नहीं लड़ेंगे। हम इस युद्ध में से पसार होने वाले नहीं हैं। हम खून-खराबा अपना न होने देंगे और न दूसरों का करेंगे। तो बाप कहते हैं- वो स्वर्ग में भी नहीं जावेंगे। ये गेट वे है - महाभारी महाभारत गृहयुद्ध। ये सच्चाई के लिए झूठ से युद्ध करना लाजमी है। (वी.सी.डी. 408)

● क्षत्रिय को तो बताया कि युद्ध में कभी भाग ही नहीं सकते। लो देखो, अब दुनिया की जो अव्वल नम्बर आत्मा है पुरूषार्थ करने वाली अर्जुन, वो उसकी हवा निकल जाती है पहले अध्याय में क्या करता है? भागने की बात करता है या नहीं? मैं युद्ध नहीं करूँगा। (वी.सी.डी. 3006)

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः। धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नं अधर्मः अभिभवति उत।।1/40

कुलक्षये सनातनाः कुलधर्माः	{भारतीय} कुल नाश होने पर {परम्परागत} सनातन कुल की {समूची अव्यभिचारी} धारणाएँ
प्रणश्यन्ति धर्मे नष्टे अधर्मः उत	नष्ट हो जाती हैं। धर्म-नाश होने पर {मुस्लिम, ईसाई आदि} विपरीत धर्म भी
कृत्स्नम् कुलं अभिभवति	समस्त कुल को {अत्याधिक हमले करते हुए हिंसा और व्यभिचार दोष से} दबा लेते हैं।

● आदि सनातन देवी-देवता धर्म वायसलेस था वह विषस बन पड़ा है। हमने पावन दुनिया स्थापन की। फिर पावन से पतित शूद्र बन पड़ते।.... पतित बन जाते हैं विकार में जाने से। (मुरली तारीख 4.9.68 पृ.2 आदि)

अधर्माभिभवात् कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः। स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः।। 1/41

कृष्ण अधर्माभिभवात्	हे विकारी-हिंसक असुरों को खींचने वाले {बाबा}! {स्लामी-क्रिश्चियनादि} अधर्मों के फैलने से
कुलस्त्रियः प्रदुष्यन्ति	कुल की {सती-साध्वी} स्त्रियाँ {दैहिक संग का रंग लगने कारण महाव्यभिचार से} प्रदूषित हो जाती हैं।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय वर्णसंकरः जायते	{भारतीय} स्त्रियों के दूषित होने पर {LON+DAN के दिखावटी ज्ञान-बरसात कर्ता} हे वार्ष्णेय! {धर्मभ्रष्ट - वंशी यूरोपवासी यादवों की पैदाइश से} व्यभिचारी प्रजा उत्पन्न होती {रहती} है।

● विदेशी धर्म हैं, चाहे क्रिश्चियन हैं, चाहे मुसलमान हैं, उनमें डायवोर्स की प्रथा खूब खुलेआम चलती है .....स्त्रियाँ जब प्रदूषित होती हैं, कोई भी स्त्री जब अनेक पुरुषों का संग करेगी तो दुनियाँ में लायवेला बहुत ज्यादा बढ़ा देगी। स्त्रियों में व्यभिचार बढ़ने से सृष्टि जो है, वो एकदम पतन की ओर जाती है। (वी.सी.डी. 359)

● बाप अपनी बच्ची को भी गंदा कर देते हैं। बाबा के पास तो सब अपना समाचार देते हैं ना। हमने यह ख़राब काम किया। ऐसे बहुत मिसाल होते हैं। कोई गुरू से ख़राब, कोई भाई से, कोई मामे से ख़राब हो पड़ते। इनको कहा ही जाता है वैश्यालय। (मु.8.2.75 पृ.2 आदि)

● दुनियाँ (में) वेश्यालय/विषय वैतरणी नदी में बह रहे हैं। मनुष्य भी हैं, बिच्छू भी हैं, टिण्डन भी हैं। ये क्यों बह रहे हैं, बोलते हैं ना! देखो, कोई बिच्छुनी है, कोई टिण्डन है, कोई नाग है बला, एक/दो को काटते रहते हैं। (साकार मु.ता. 5.12.68)

सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च। पतन्ति पितरो हि एषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः।। 1/42

संकरो कुलस्य च कुलघ्नानां नरकायैव	{पशुतुल्य} वर्णसंकर प्रजा कुल की और कुलनाशकों की दुर्गति हेतु ही {होती} है;
हि एषां पितरः	क्योंकि इनके {कल्पान्त कालीन पुरानी दुनिया के ॐ मण्डली वाले रुद्राक्ष रूप संसारबीज/पूर्वज} पितृगण {भी}
लुप्तपिण्डोदकक्रियाः पतन्ति	{बड़ों प्रति} श्रद्धाभाव की क्रिया के लुप्त होने से {महागरीब परिवारों में} अधोगति पाते हैं।

- वो निराकार जिस साकार में आते हैं, वो जन्म ही गरीब घर में होता है या साहुकार घर से आता है? गरीब से आता है। (वी.सी.डी. 1896)
- यज्ञ के आदि में भागीदार का कुछ एग्रीमेन्ट हुआ होगा ब्रह्मा बाबा के साथ। फिर लड़ाई हुई तो सारा ले लिया। अगर ले लिया तो अगले जन्म में रईस बनेगा या गरीब बनेगा? क्या बनेगा? गरीब घर में जन्म लेगा ना! तो गरीब घर में जन्म मिलता है। राम फेल हो गया ना। (वी.सी.डी. 287)

दोषैः एतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः। उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः।। 1/43

कुलघ्नानां एतैः वर्णसंकरकारकैः	{आर्यसमाजियों जैसे धर्मपरिवर्तन के स्वभावी} कुलनाशकों के इन वर्णसंकरकारी {महाविनाशकारी}
दोषैः जातिधर्माः च शाश्वताः	दोषों से जाति-धर्म {जैसी 'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टम्' वाली श्रेष्ठ परम्पराएँ} और स्थायी
कुलधर्माः उत्साद्यन्ते	कुल की धारणाएँ नष्ट हो जाती हैं। {इसी से आज समूची संगठित पारिवारिक व्यवस्था प्रायः लोप है।}

- कलियुग में देखो, मनुष्य का क्या हाल है। अख़बार में पड़ा था- 42 वर्ष का आदमी है, उनको 43 बच्चे हैं। फिर इतनी युगल गिनाई।.....कब तीन, कब चार बच्चे पैदा किए।.....तो उनको क्या कहेंगे? कुतरे। कुतरे से भी जास्ती। .....सतयुग में तो एक धर्म, एक भाषा, एक बच्चा होता है। (मुरली तारीख 7.4.69 पृ.2 मध्यादि)

- जहाँ देखी तवा बरात, वहीं बिताई सारी रात। तो ऐसे करते हैं, वो है आर्यसमाजी; इसलिए उनको किसी धर्म से कोई लेना देना नहीं। वो कहते हैं- धर्म निरपेक्ष राज्य। हमें किसी धर्म की अपेक्षा नहीं है। तुम कोई भी धर्म को मानो, भंगियों के धर्म को अपना लो। भंगी बन जाओ, चमार बन जाओ, चांडाल बन जाओ तुम हमको वोट देते रहो। (वी.सी.डी. 2843)
- इस समय सारी दुनिया अछूत(मेहतर) है; क्योंकि विष पीते-पिलाते हैं। (मुरली तारीख 20.11.74 पृ.1 मध्यादि)

उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन। नरकेऽनियतं वासो भवति इति अनुशुश्रुम।। 1/44

जनार्दन उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां	हे जनार्दन! नष्ट हुए कुलधर्मी मनुष्यों का, {संगम की भी चतुर्युगी शूटिंग में}
अनियतं नरके वासो भवति इत्यनुशुश्रुम	अनिश्चितकाल तक {राक्षसी} नरक में वास होता है, ऐसा {हमने} सुना है।

- बुरा कर्म करते हैं तो एकदम पाताल में चले जाते हैं। (मुरली तारीख 5.6.69 पृ.2 मध्य)
- दूसरे धर्म वाले उस नई दुनिया में आ (न)हीं सकते हैं। (मुरली तारीख 1.2.69 पृ.1 अंत)

अहो बत महत् पापं कर्तुं व्यवसिता वयं। यत् राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनं उद्यताः।। 1/45

अहो बत वयं महत्पापं कर्तुं व्यवसिताः	अरे रे! हम {विधर्मी हत्या का} भारी पाप करने के लिए तैयार हो गए हैं,
यद्राज्यसुखलोभेन स्वजनं	जो {अल्पकालीन विश्व-} राज्य-सुख के लोभ से अपने {ही कनवर्टिड सगे-संबंधी} लोगों को
हन्तुं उद्यताः	{अपने-2 महान धर्मपिताओं की धारणाओं में अनिश्चय रूपी मौत} मारने के लिए तैयार हो गए हैं।

- दुर्योधन-दुशासन पुरूष रूप। तो बताया, इन असुरों को मारो गोली। कौन-सी गोली? ज्ञान की गोली मारो। (वी.सी.डी 3195)

यदि मामप्रतीकारं अशस्त्रं शस्त्रपाणयः। धार्तराष्ट्रा रणे हन्युः तत् मे क्षेमतरं भवेत्।। 1/46

यदि अप्रतीकारं अशस्त्रं मां	यदि बदला न लेने वाले {ज्ञान}-शस्त्र रहित, {कोई प्रतिवाद न करने वाले} मुझको, {धर्मयुक्त
शस्त्रपाणयः	बुद्धि रूपी} हाथ में {विदेशियों से प्रभावित अधर्म के छलछिद्र से बने} हथियार लिए हुए {टाटा-बिरला जैसे}
धार्तराष्ट्रा	धृतराष्ट्रों के पुत्र {रूप कांग्रेसी कौरव, दीर्घकालीन राज्य-जाति-भाषादि की सिविलवार से पैदा किए गए
रणे हन्युः	हिन्दू-मुस्लिमादि के सन्नद्ध धर्म-} युद्ध में, {भावात्मक या दैहिक मौत की भी हिंसा करके} मार डालें,
तत् मे क्षेमतरं भवेत्	वह मेरे लिए विशेष कल्याणकारी होगा। {ऐसे देह और दैहिक संबंधों के भान में रहते हुए,}

- संगदोष में आए अथवा माया के वश हो कुछ कर लिया। अपने पैर पर कुल्हाड़ा मारा। (मु.ता.29.11.74 पृ.3 आदि)
- मोहवश कुछ समझते थोड़े ही हैं कि हम कैसे रहते हैं। (मुरली तारीख 6.6.85 पृ.3 आदि)

संजय उवाच-एवमुक्त्वा अर्जुनः सङ्ख्ये रथोपस्थ उपाविशत्। विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः।। 1/47

एवं उक्त्वा शोकसंविग्नमानसः	ऐसा कहकर, शोक से व्याकुल हुए चित्त वाला, {मन-बुद्धि से भ्रमित हुआ,}
अर्जुनः संख्ये सशरं	{शिथिल इन्द्रियों वाला, अपनी आत्म-स्थिति भूला हुआ} अर्जुन धर्मयुद्ध-भूमि में {ज्ञान}-बाणों सहित,
चापं विसृज्य रथोपस्थ उपाविशत्	{पुरुषार्थ रूपी} धनुष को छोड़कर {शरीर रूपी} रथ पर {हिम्मत हारके} बैठ गया।

- जो जितनी हिम्मत रखेंगे, उतनी मदद मिलेगी। पहले ही अपने में संशय-बुद्धि होने से हार हो जाती है। (अव्यक्त वाणी 5.3.71 पृ.35 मध्य)
- अच्छे-2 बच्चे माया से हार खा लेते हैं। माया बड़ी प्रबल है। (मुरली तारीख 10.1.69 पृ.2 अंत)
- अर्जुन श्रेष्ठ पुरूषार्थी था ना। सारे विश्व को विजय करने वाला था ना। लेकिन पत्थरबुद्धि, कैसे? युद्ध करना है कि नहीं करना है, कि छोड़ के बैठ जाना है, धनुष-बाण छोड़ करके बैठ गया। (वी.सी.डी. 3405)

अभ्यास प्रश्न

भूमिका, भविष्यवाणी, शब्दार्थ, अध्याय-1

(I) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताएँ :-

1. पांडव मुट्ठी भर होते हैं, कौन-से श्लोक से यह बात सिद्ध होती है?
2. कौरव सेना में कुल कितने महारथी हैं? नाम सहित बताएँ।
3. दुर्योधन ने भीष्म की रक्षा करने के लिए क्यों बोला और रक्षा न करने से उसकी क्या हानि होगी?
4. सबसे बड़ा अधर्म क्या है?
5. कलियुगांत में ही धर्म की ग्लानि होती है, गीता का प्रूफ बताएँ?
6. हनुमान की तुलना किससे की है?
7. सनातन धर्म के लोप होने से क्या नुकसान होता है?
8. महाभारत युद्ध में कौन-2 से वाद्ययंत्र का प्रयोग किया गया?
9. भारत के पतन का मूल कारण क्या है?
10. किस प्रकार की आत्माओं का लम्बे समय तक नरक में वास होता है?
11. पारिवारिक व्यवस्था लोप होने का कारण क्या है?
12. Bks के अकाले मृत्यु होने का कारण क्या है?
13. पांडवों के शस्त्र क्या हैं?
14. आज के नेताओं को कौरव क्यों बोला है?

(II) निम्नलिखित प्रश्नों को बेहद में समझाएँ :-

1. भगवान आकर गीता-ज्ञान भीष्म पितामह जैसे पवित्र संन्यासियों को नहीं, विद्वान-पंडित जैसे द्रोण और कृपाचार्य जैसे वेतन भोगियों को नहीं, अर्जुन जैसे गृहस्थियों को देते हैं। ऐसों की प्रत्यक्ष रिहर्सल करने वाली ब्रह्माकुमारीज़ है। इसको बाबा ने कैसे टैली किया है? ब्रह्माकुमारीज़ ऐसा क्या करती हैं - समझाएँ।
2. अर्जुन ने शिवबाबा से अपने रथ को युद्ध भूमि में कहाँ स्थित करने के लिए कहा और क्यों उसी स्थान पर स्थित करने के लिए कहा? शिवबाबा ने अर्जुन की बात क्यों मानी?
3. भीष्म पितामह ने दुर्योधन को हर्ष उत्पन्न कराने के लिए जो शंख बजाया , उसकी तुलना बाबा ने किस चीज़ से की है?
4. कैसे सिद्ध करेंगे कि गीता-ज्ञान अभी भगवान के द्वारा दिया जा रहा है और महाभारत युद्ध अभी शुरू होने वाला है?
5. महाभारत युद्ध कैसे शुरू हुआ?

(III) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक शब्द में दें :-

1. मन रूपी मणि का प्राप्त कर्ता कौन है?
2. जीते जी स्वर्ग में कौन जाते हैं?
3. अनेक नगरों का विजेता कौन है?
4. दु:शासन के विपरीत स्वभाव वाला कौन है?

(IV) निम्नलिखित नाम किसके लिए बोले हैं? अर्थ सहित व्याख्या दें :-

1. केशव
2. कृष्ण
3. मधुसूदन

4. जयद्रथ
5. विभूति
6. मन्त्र
7. अदिति
8. कौरव
9. पंडा
10. अनंत
11. धेनु
12. गुडाकेश
13. धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र

(V) रिक्त स्थान भरें :-

1. स्वतंत्रता के बाद भारत में एक ऐसे ..... का उदय होगा, जो वैज्ञानिकों का भी वैज्ञानिक होगा। वह आत्मा और परमात्मा के ..... को प्रगट करेगा। आत्मज्ञान उसकी देन होगी। उसकी वेश-भूषा..... होगी।
2. भारत का अभ्युदय एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में हो जाएगा; पर उसके लिए उसे बहुत ..... करने पड़ेंगे। देखने में यह स्थिति अत्यंत ..... होगी; पर इस देश में एक फरिश्ता आएगा जो हज़ारों ..... इकट्ठा करके उनमें इतनी आध्यात्मिक शक्ति भर देगा कि वे लोग बड़े-2 बुद्धिजीवियों की मान्यता मिथ्या सिद्ध कर देंगे।
3. गाण्डि..... – वज्र की गांठ से बना हुआ लचीली देह का पुरुषार्थ रूपी धनुष, जो सोम, वरुण और .... के पास भी रहा था। काँटों के संसार रूपी जंगल में भिन्न -2 धर्म-खण्डों में बँटे ..... करने के लिए इसका निर्माण हुआ था और..... था।

(VI) निम्नलिखित प्वॉइण्ट्स को गीता-श्लोक से टैली करके अर्थ सहित समझाएँ :-

1. सच जब निकलता है तो झूठ सामना करते हैं।.....तुम किसको सच बताते हो तो जैसे मिर्ची लगती है। (मु.ता.9.5.73 पृ.3 अन्त)
2. मित्र-संबन्धियों का मुँह देखा और लट्टू हो बैठ गए। मोह ने घेर लिया। यह भी ड्रामा की भावी। (मु.ता.15.7.08 पृ.3 आदि)
3. मोह तब जाता है जब यह स्मृति रहती है कि हम गृहस्थी हैं। हमारा घर, हमारा संबंध है, तब मोह जाता है। (अ.वा.ता. 22/7/72 पृ.160)
4. कलियुग में देखो, मनुष्य का क्या हाल है! अख़बार में पड़ा था- 42 वर्ष का आदमी है, उनको 43 बच्चे हैं। फिर इतनी युगल गिनाई।.....कब तीन, कब चार बच्चे पैदा किए।.....तो उनको क्या कहेंगे? कुतरे। कुतरे से भी जास्ती। .....सतयुग में तो एक धर्म, एक भाषा, एक बच्चा होता है। (मु.ता.7.4.69 पृ.2 मध्यादि)
5. दूसरे धर्म वाले उस नई दुनिया में आ नहीं सकते हैं। (मु.ता. 1.2.69)
6. अच्छे-2 बच्चे माया से हार खा लेते हैं। माया बड़ी प्रबल है। (मु.ता.10.1.69)

(VII) अध्याय -1 का नाम क्या है और नाम के आधार पर उसका सार क्या है? अपने शब्दों में वर्णन करें।

अथवा

गीता शास्त्र का महत्त्व आप अपने शब्दों में व्यक्त करें।